मवेशियों के साधारण रोग

जगपति चतुर्वेदी

छात्र-हितकारी-पुस्तक-माला, दारागंज, इलाहाबाद

ग्राम सुधार माला संख्या—९

मवेशियों के साधारण रोग

लेखक

जगपति चतुर्वेदी

सह-सम्पादक, विज्ञान

प्रकाशक

छात्रहितकारी पुस्तकमाला

दारागंज, प्रयाग

प्रथम संस्करण] १९५५ [मू० ॥)

प्रकाशक
श्री केदारनाथ गुप्त, एम० ए०
छात्रहितकारी पुस्तकमाला
दारागंज प्रयाग ।

मुद्रक
सरयू प्रसाद पांडेय
नागरी प्रेस, दारागंज
प्रयाग ।

अपनी बात

विज्ञान की खोजों से खेती-बारी और मवेशी-पालन का सुधार करने की आज हमारे देश को बड़ी आवश्यकता है। उसके लिए राज्य की सरकारों द्वारा जगह-जगह महकमे भी खुल गए हैं जिनसे किसान काफी फायदा उठा सकते हैं लेकिन जब तक किसानों में वैज्ञानिक भावना और जागरूकता न पैदा हो तब तक वे नई खोजों से पूरा फायदा नहीं उठा सकते। हमने अपनी शक्ति भर नई से नई खोजों को सरल से सरल भाषा में समझाकर इस पुस्तकमाला की पुस्तकों को किसानों के लिए काफी उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया है। इसके लिए हमें सरकारी पुस्तिकाओं और दूसरी पुस्तकों से काफी मदद मिली है। कृषि महाविद्यालय, नैनी के पशुपालन विभाग के अध्यक्ष श्री ओ० पी० अग्रवाल से मवेशियों के विषयों की जानकारी में भरपूर सहायता मिली है इसलिए हम उनका विशेष आभारी हैं। यदि ये पुस्तकें लोगों को पसन्द आईं तो इन विषयों की और भी बहुत सी पुस्तकें तैयार होने की आशा है।

जगपति चतुर्वेदी
सह-संपादक, 'विज्ञान'

विषय सूची

१. मुँह में छाले पड़ना	...	५-७
२. गले का घुटना	...	७-१२
३. अफरा या पेट फूलना	...	१०-१९
४. बदहजमी	...	१९-२३
५. कब्ज	...	२३-२८
६. पेट चलना या दस्त	...	२८-३३
७. पेचिस या आँव	...	३३-३६
८. खाँसी	...	३६-४०
९. प्रसूति का बुखार	...	४०-४२
१०. ऐंन की सूजन	...	४३-४७
११. साँप का काटा, बरें का काटा	...	४५-४७
१२. जहर खाना	...	४७-५२

मवेशियों के साधारण रोग

१—मुंह में छाले पड़ना
(STOMATITIS)

मवेशियों के मुंह के अन्दर झिल्ली में सूजन हो जाती है जिस से छाले पड़ जाते हैं, राल बहुत अधिक गिरने लगती है। मवेशी रोज खाया जाने वाला मामूली चारा ठीक तरह खा नहीं सकता। मुंह से बदबू आती है, हाथ भीतर डालने पर मुंह गर्म मालूम पड़ता है, मुंह से गर्मी की भभक सी निकलती है, मुंह के कांटे बड़े हो जाते हैं, जीभ फूल जाती है। यह सब इस रोग की खास पहचानें हैं। कभी कभी इस में कुछ बुखार भी हो जाता है।

छूत वाली बीमारियों के भी कारण ये लक्षण पैदा हो सकते हैं, इसलिए उसका ध्यान रखना उचित है, लेकिन मामूली तौर पर इसका कारण बदहजमी या कोई कड़ी चीज खाना हो सकता है। मुंह काटने वाली चूना सरीखी कोई तेज चीज खा लेने या पेट की भीतरी गर्मी से भी यह रोग पैदा होता है।

इलाज—इस बीमारी की हालत में जानवर के चारे का खास इन्तजाम बहुत जरूरी है। सिर्फ नर्म और दस्तावर खाना देना चाहिये। दलिया या लपसी, दूध, पानी में साना भूसा (सानी), काटी हुई घास या हरा

चारा ही इस बीमारी के मवेशी का ठीक खाना है। सूखा चारा जहाँ तक बचाया जा सके, न दिया जाय। मुंह को रह रह कर पोटेशियम परमेंगनेट (कुएं में डाली जाने वाली लाल दवा) के हल्के घोल (दवा का १००० गुना पानी मिलाया) या एक या दो फीसदी बोरिक या फिटकरी के घोल से धोते रहना चाहिये।

भूने हुये सोहागा को राब (शीरा) या शहद में फेट कर मुंह के भीतर झिल्ली पर लपेटना चाहिये। पानी के साथ हल्का जुलाब भी दिया जा सकता है। चारा और मैगनीसियम सल्फ हल्के जुलाब का काम दे सकता है।

हल्के जुलाब के लिये नीचे के नुस्खे भी ठीक हैं :--

(१) सरसों या रेंड़ी का तेल १० छटांक
सोंठ २ तोला

सोंठ को पीसकर तेल में फेंट कर ढरके से पिला दिया जाय।

(२) लाहौरी नमक २ छटांक (४ औंस)
गंधक १½ छटांक (३ औंस)
सोंठ १¾ तोला (४ ड्राम)
शीरा १½ छटांक (३ औंस)

सवा सेर गरम पानी में ये चीजें खूब फेंटी जायँ और कुछ गरम रहने पर ही पिला दी जायँ।

(३) रेड़ी का तेल   ५ छटांक (१० औंस)
अलसी का तेल   ३ छटांक (६ औंस)

इन दोनों को मिला कर पिलाया जाय।

मुंह धोने के लिये नीचे की दवा भी काम दे सकती है :—

कीकर की छाल, नमक और फिटकरी तीनों को उबाल कर या नीम की पत्ती उबाल कर गर्म पानी बर्दाश्त लायक होने पर उससे मुंह की झिल्ली धोनी चाहिए।

मुंह में लेप करने के लिये सोहागा, कत्था बारीक पिसी हुई हल्दी बराबर लेकर शहद या शीरा या घी में लपेट कर काम में ला सकते हैं। केले की राख मक्खन में लपेट कर भी लगा सकते हैं। लेप लगाने के दो तीन घंटे बाद तक कुछ खाने को न दिया जाय।

२—गले का घुटना

(CHOKING)

कंठ या गले में चारे का कोई बड़ा टुकड़ा अटक जाने से खाना निगलने में रुकावट हो जाती है। मवेशी खाँसने लगता है, और लार गिराता है, उसे घबड़ाहट मालूम पड़ती है। पानी पीने पर वह नाक से बाहर निकल आता है। इसका नतीजा यह हो जाता है कि

जुगाली करना बन्द हो जाता है और पेट के बाएं हिस्से में सूजन हो आती है।

कोई बड़ी सख्त या गोल चीज गाजर, शलजम वगैरह या चमड़े के टुकड़े, कील, कांटे, नोकीली या कड़ी लकड़ी के टुकड़े और दूसरी कोई भी इसी तरह की चीज खा लेने से वह मुंह से पेट में खाना पहुँचाने वाली नली में अटक सकती है। ये चीजें बहुत कड़ी और नोकीली हों तो उनसे गले की झिल्ली भी छिल सकती है। ईख और करबी के भी टुकड़े गले में अटक कर तकलीफ पैदा कर सकते हैं।

जब गले में ऐसी रुकावट पैदा हो जाती है तो मवेशी के गर्दन की पेशियों में ऐंठन सी जान पड़ने लगती है। उसकी वजह यह है कि मवेशी कोशिश करता है कि जो चीज गले में गोला सा बन कर अटक गई है उसे पेट के अन्दर उतार ले या उगल कर मुंह से बाहर कर दे। बादी के कारण पेट भी फूलना शुरू होता है। अगर गले की रुकावट जल्दी दूर न की जाय तो पेट का बायां हिस्सा बहुत ज्यादा फूल उठे।

<u>इलाज</u>—अटकी हुई चीज कभी तो गले के मुंह के पास ही हो सकती है और कभी गले के ज्यादा नीचे गले और पेट के बीच की नली में होती है। जब अटकी हुई चीज गले के मुंह के पास ही हो तो जानवर

काबू में कर उसके मुंह से जीभ बाहर कर एक ओर कर लेनी चाहिये और मुंह के अन्दर अटकी चीज को टटोलना चाहिये। हाथ को चिकना कर उससे अटकी चीज निकलने में प्रायः कामयाबी मिल सकती है। जब अटकी चीज अधिक गहराई में हो तो गला टटोलने से वह कहीं नहीं ज्ञात पड़ सकती है। ऐसी हालत में कुछ गर्म पानी में तेल मिला कर मवेशी को पीने के लिए दिया जाय। कुछ देर तक इसके साथ अटकी हुई चीज को अपने आप कुछ आगे बढ़ने का मोका देना चाहिये। कुछ ठहर कर फिर हल्के गर्म पानी में तेल मिलाकर दुबारा, तिबारा पिलाते रहना चाहिए जिससे अटक की चीज धीरे धीरे खिसक कर पेट में उतर जाय और गले की रुकावट हट जाय। इस तरकीब के करने पर भी चीज गले से नीचे उतर कर पेट में न पहुँच जाय तो उसका इलाज मवेशी या डाक्टर ही कर सकता है। पेट में सूजन होने लगने पर बाहर से छेद कर देना भी तकलीफ हटाता है।

गले से अटकी चीज बाहर न निकाल सकने पर एक मामूली तरकीब कभी-कभी काम कर सकती है। एक बेंत के सिरे पर पिचकारी के भीतर के डंडे (पिस्टन) के सिरे के लपेटन की भाँति कपड़े को गीला बना लिया जाय। उस बंधी गोल गद्दी पर घी या तेल डालकर चिकना कर लिया जाय। फिर उसे मवेशी के गले में डाल कर आहिस्ते

अहिस्ते भीतर करने की कोशिश की जाय। बहुत कुछ मुमकिन है कि अटकी हुई चीज चिकनाई वाले गोल कपड़े की गद्दी द्वारा ढकेले जाने से पेट में जा पहुँचे। बाहर से गले पर धीरे धीरे पेट की ओर मालिश करते रहना चाहिये। अगर अटकी चीज पेट में उतर जाय तो बाद में भुना हुआ पिसा सोहागा या कच्चे केले को जला कर बनाई और छानी हुई राख तिल के तेल में फेंटकर मिला देना चाहिए। गले के अन्दर झिल्लियों के कटे होने पर इस दवा से कुछ जल्दी आराम मिल सकता है।

अटकी चीज को खिसकाने के लिये हल्का गरम अलसी का तेल पाँच छटांक (आधा पाइंट) और शराब एक छटाँक (दो औंस) खूब मिलाकर धीरे धीरे पिलाना लाभ पहुँचाता है। इन को पिलाने से चिकनाई के कारण अटकी चीज को आगे की ओर सरकने में मदद मिलती है। अगर दवा बार-बार मुंह वा नथनों के रास्ते लौट आती रहे तब भी उसे पिलाते रहना चाहिये। थोड़ी-थोड़ी चिकनाई से जरा-जरा भी अटकी चीज हर बार सरकती जाय तो कुछ देर में गले की रुकावट दूर हो सकती है। हर बार दवा बहुत थोड़ी ही देनी चाहिये। यदि दवा ज्यादा दी गई तो साँस लेने की नली में उसके पहुँचने से मवेशी की मौत हो सकती है। तेल और शराब देने के

बाद गले की फूली हुई जगह को हाथ से दबाना चाहिए। ऐसा कई बार करने से रुकावट हट सकती है।

गले की गहराई में अटकी चीज होने पर बेंत के सिरे पर कपड़े, सन या रुई की गोल गद्दी बाँध कर ढकेली जाय तो उसे जोर से ढकेलने पर गले की नली हमेशा के लिए खराबी पैदा होना भी मुमकिन है। गले की झिल्ली में गड्ढा सा बन सकता है जिस में खाने की चीजें प्रायः अटक जाया करें।

मजबूरी की हालत में मवेशी के डाक्टर जर्राही कर चीरा द्वारा अटकी चीज को बाहर निकाल लेते हैं। लेकिन यह काम दूसरा अनाड़ी आदमी नहीं कर सकता। इसके लिये मवेशी के अस्पताल में ही जाना चाहिये या मवेशी का डाक्टर बुलाना चाहिये।

मवेशी के गले में झिल्ली कटने का डर बराबर रह सकता है, इसलिये जब कभी हाथ डाला जाय, उसे खूब साफ कर ही डाला जाय। बेंत में लगी कपड़े की गद्दी या इस तरह कोई दूसरी चीज डाली जाय तो उसे भी साफ डाला जाय जिससे दूसरी बीमारी होने का डर न हो।

गले से अटकी चीज निकल जाने के बाद मवेशी को कई दिन तक गर्म गर्म और नर्म नर्म चीजें ही खाने को देनी चाहिये। पानी और मांड गर्म दिया जाना चाहिये।

नर्म खानों में दलिया, सत्तू, चोकर और मुलायम सूखा चारा या हरी घास देना ठीक है।

३—अफरा या पेट फूलना

(TYMPANITES OF THE RUMEN)

पेट गैस भरने से फूल जाता है जिसे पेट में बाईं ओर उंगली से ठोकने पर कसे हुये ढोल की तरह आवाज होती है। पेट फूलने से फेफड़ा भी कुछ दब जाता होगा जिससे साँस लेने में भी कुछ दिक्कत हो सकती है।

पेट फूलने का कुछ खास कारण होता है। मवेशी रसदार चारा बहुत अधिक खा लेता है जो जल्दी खमीर उठाने लगे तो उससे पैदा गैस पेट में तनाव पैदा कर देती है। यह मवेशियों की मामूली बीमारी है। जिस चारे को मवेशी पहले किसी कारण काफी नहीं पा सकता था, वही एक व एक मिलने पर वह स्वाद के मारे बे अन्दाज खाता चला जाता है। बरसात शुरू होने पर ऐसी हालतों में मवेशी को पड़ने का मौका होता है। सूखे मैदानों में जहाँ हरियाली मुश्किल से मिल सकती थी वहाँ पानी बरसने से घास पात पनप उठते हैं और मवेशी ठूस ठूस कर खाने की कोशिश करने लगता है एक साथ ही बहुत से मवेशी इसी तरह अन्दाजे से ज्यादा चारा खा खा कर बीमार पड़

सकते हैं जिससे कोई महामारी सी होने का डर मालूम पड़ने लगे।

अफरा या पेट फूलने की बीमारी होने पर मेदे के बाएं भाग में गैस या हवा भरी मालूम होने लगती है। जानवर मुश्किल से साँस लेता है। सिर और गर्दन तन जाते हैं। जानवर डकारने लगता है। उसका बदन अकड़ जाता है। वह हिलता जुलता नहीं जान पड़ता। बीमारी बढ़ती ही जाती हैं। पेट अधिक फूलने लगता है। मवेशी बैठने पर साँस लेने में ज्यादा तकलीफ मालूम करता है। उस लिए वह खड़ा हो जाता है। मेदे की हवा या गैस जोर से बढ़ती मालूम पड़ती है। वह बाहर न निकाल दी जाय तो मवेशी के लिये साँस लेना और भी मुश्किल हो जाता है। पेट बहुत फूल जाता है जिससे वह खड़ा भी नहीं रह सकता। ऐसी मुसीबत में ही उसका दम घुट जाता है और वह गिर कर मर जाता है। कभी कभी गले में कुछ चीज अटक जाने से पागुर करना बन्द हो जाता है। इस कारण मेदा फूल जाता है।

अफरा या हवा से पेट फूलने की मामूली बीमारी से तो मवेशी दस बारह घन्टे तक जी सकता है लेकिन जब बहुत तेज बीमारी हो तो पेट फूलना शुरू होने के बाद एक ही घन्टे में या तीन घन्टे के भीतर ही उसकी मौत हो सकती हैं।

इलाज—मेदे पर बाईं ओर के भाग में दबाव के साथ मालिश करनी चाहिए। ठंडे पानी की धार छोड़कर और तारपीन का तेल मल कर भी उसे ठीक करना चाहिए। मेदे से हवा बाहर निकालने की नई तरकीब हो सकती है। मवेशी के बदन के चारों ओर रस्सी लपेट कर उसे कसा जाय। मुंह से जीभ बाहर निकाल कर खींची जाय। मुंह में एक काठ की गुल्ली जबड़ों के बीच रक्खी जाय। सींगों की जड़ में एक रस्सी बाँध कर उससे गुल्ली को एक जगह मुंह में चिपका रहने दिया जाय।

मेदे में अधिक गैस न बनने देने के लिये भी कुछ उपाय किया जाय। इसके लिए खमीर बनना रोकने के लिये दस या बीस छटाँक (एक या दो पौंड) अलसी के तेल में आधी या एक छटाँक (एक या दो औंस) तारपीन का तेल मिलाकर दिया जाय। इस दवा के देने के कुछ घन्टों बाद कोई खारा जुलाब दिया जाय। पाव भर मेगनीसियम सल्फ या पाव भर (आधा पौंड) मामूली नमक जुलाब का काम देने के लिए काफी हो सकता है। लकड़ी के कोयला या चूरा, पुराना आम का अँचार, हींग, काला नमक, सरसों, सोंठ, वगैर कुछ चीजें हैं जो खमीर बनाना रोक सकती हैं। बीमारी की पहली तेज़ी जब तक चली न जाय तब तक उसे कुछ भी खाने को नहीं देना चाहिये। यानी बहुत ही कम देना चाहिये। बहुत अधिक तेजी की

बीमारी में कोख (मेदे) के बाएं हिस्से में बीच में तेज चाकू या नश्तर से गहरा छेद कर दिया जा सकता है।

कभी कभी मवेशी अनाज या दाना खाने का मौका पा जाने पर उसे ही भर पेट खा लेता है। तब भी बाद में उस अनाज या दाने के फूल उठने से अफ़रा हो सकता है। मवेशी चारा या दाना खाकर पहले उसे मेदे के एक भाग में भेजता है जिसे पहला मेदा या ओझड़ी कहते हैं। वहां से ही वह जुगाली के समय फिर गोलियाँ बन कर मुंह में कुचले जाने के लिए लौटता है। उसी को जुगाली करना कहते हैं। उसी में अटकी पड़ी या सड़ने या खमीर उठाने वाली चीजें भी गैस या हवा पैदा कर पहले मेदे या ओझड़ी को फुला देती हैं। जब चारा या दाना इस पहले मेदे या ओझड़ी से उसके मुख में कुचले जाने के लिए भेजा ही न जाता हो तो मवेशी क्या करे। आदमी या दूसरे जानवर तो एक बार ही खाने का काम खतम कर देते हैं। पचाने के काम में मेदा ही खुद काम करता है। लेकिन जुगाली करने वाले जानवरों के लिये यह परेशानी होती है कि पहले मेदे में पहुँचा चारा दाना फिर उनके जबड़ों के जरिये कुचले जाने के लिये आना जरूरी होता है। असल में वह खाने का ही काम होता है जिसे मवेशी पहले आधा ही पूरा किए होता है। इसी लिए पहले मेदे या ओझड़ी में अटका चारा हवा या गैस

पैदा कर मवेशी के लिये जान का खतरा पैदा करता है। उस दिक्कत को दूर करने के लिये कुछ तरकीब, दवाएं या जर्राही की जरूरत पड़ती है।

पेट में हवा जाने से फूलने की बीमारी होते ही नीचे की दवा दी जा सकती है।

देशी शराब	२ छटाँक (४ औंस)
सोंठ	५ छटाँक (१० औंस)
पिसी हुई काली मिर्च	$\frac{1}{4}$ छटाँक ($\frac{1}{2}$ औंस)

इन सबको खूब अच्छी तरह मिलाकर सवा सेर (एक क्वार्ट) पानी के साथ दिया जाय। अगर दवा असर कर जाय तो मवेशी जल्दी ही डकारना शुरू कर देगा। डकार ज्यादा आने लगने पर पेट का फूलना भी कम होगा और साँस लेने में भी रुकावट कम होने लगेगी।

नीचे की दवाएं भी पिलाने पर फायदा पहुँचा सकती हैं—

(१) सोंठ	२ तोला
हींग	६ माशा
नमक	१० तोला
काली मिर्च	६ माशा
तारपीन का तेल	२$\frac{1}{2}$ तोला

(२) काला नमक — २ तोला
अजवाइन — २ तोला
आम का पत्ता — १ छटाँक

सब को खरल कर गर्म पानी में पिलाया जाय।

(३) आधा पाव उर्द पीसकर गर्म पानी में पिलाया जाय।

(४) अलसी का तेल — एक सेर
तारपीन का तेल — आधी छटाँक
अदरक — आधी छटाँक
कार्बोलिक ऐसिड—एक छोटे चम्मच भर इन सब को मिलाकर पिलाया जाय

(५) लाल मिर्च — ६ माशा
अदरक — ४ तोला
हींग भुनी — १ तोला

सब को पीस कर गोली बनाकर गर्म पानी के साथ तीन तीन घन्टे पर खिलाया जाय।

नीचे लिखी मालिश या सेंक भी फायदा पहुँचाती है :—

(१) सरसों मा तेल — ४ छटाँक
पिसा गंधक — ४ छटाँक
पीसी सोंठ — १½ तोला

एक में सबको मिला कर मला जाय।

(२) ताजा गोबर दोनों कोखों पर मला जाय।

(३) सरसों का तेल नमक के साथ फेंट कर कोख पर मला जाय।

(४) गर्म पानी में कंबल भिगो कर कोख सेंका जाय। बार बार सेकने से फायदा होता है।

झुंड में किसी मवेशी को पेट फूलने की बीमारी होने पर इस बात का ख्याल रक्खा जाय कि दूसरे मवेशी बहुत ज्यादा चारा न खाने पावें। ज्यादा खाने से यह उनको भी हो सकता है।

ओझड़ी या पहले मेदे को तेज चाकू से छेद कर किसी नली से गैस बाहर आने दी जाती है। ओझड़ी में छेद करने का काम मवेशी का डाक्टर करता है लेकिन बहुत जरूरत होने पर मवेशी का मालिक ही यह काम कर सकता है। पेट की बाईं ओर के ऊपरी हिस्से में सब से आखिरी पसली, कूल्हे की हड्डी की नोक और कमर के बगल की हड्डियों तक बराबर दूरी रखने वाली जगह पर जो आखिरी पसली और कूल्हे की हड्डी की नोक के बीच हो, नोकदार चाकू से पेट में छेद कर देना चाहिये। छेद इतना बड़ा बनाया जाय कि उंगली के बराबर मोटी बाँस की छः इञ्च लंबी नलकी घुस सकती हो। यह नलकी उस छेद से भीतर पहुँचाने पर हवा को बाहर आने दे। एक घन्टे तक नलकी उसी तरह लगी रक्खी जाय। बाँस

की नलकी को पेट में भीतर गिर न जाने देने के लिए ऊपरी सिर पर किसी आड़ी लकड़ी से बाँध देना चाहिये।

४—बदहजमी

(IMPACTION OF THE RUMEN)

मेदे में ठोस और प्रायः सूखा चारा बहुत ज्यादा ठूस जाने से यह बीमारी होती है। इसमें मेदे की सिकुड़ने की शक्ति कम हो जाती है। यह बीमारी धीरे धीरे होती है, मवेशी पहले खाना बन्द कर देता है, सुस्त पड़ जाता है, पेट में पीड़ा सी मालूम पड़ने लगती है और डकारने लगता है। मेदे में बाईं ओर होने पर तनाव मालूम पड़ सकता है, उस भीतर की चीज कड़ी सूखी मालूम पड़ती है लेकिन पेट फूलने की बीमारी समान उंगली से ठोकने पर ढोल या खोखली चीज सी आवाज नहीं होती।

देर में पचने वाला, कड़ा और मोटा चारा, सरकंडा वगैरह ओझड़ी में जाकर अटक जाता है या कम चारा मिलते रहने पर एक ब एक ज्यादा चारा मिल जाने पर मवेशी ठूस ठूस कर खा लेता है। इस तरह अचानक एक बार बहुत अधिक चारा मेदे में भर लेने से यह तकलीफ हो सकती है। कभी चारा खा चुकने पर मवेशी को इच्छा भर पीने को पानी न मिले तब भी यह बीमारी हो सकती

है। मेदे में कड़ापन और तनाव होने से उसका काम रुक जाता है। इस बीमारी को देख कर पेट फूलने की बीमारी का धोखा होना मुमकिन है। लेकिन यह बीमारी पेट में हवा भरने की बीमारी के मुकाबले धीरे धीरे फैलती है। मेदा उंगली से दबाने पर ऐसा गड्ढा बनता है जैसे नर्म मिट्टी में उंगली दबाने से बन सकता है। एक घंटे में बीमारी जान पड़ने लगती है। इस बीमारी की तकलीफ से मवेशी अपने नथने उठाये रखता है जिससे कुछ आसानी से साँस ले सके। उसकी साँस जल्दी जल्दी चलने लगती है। साँस के साथ ही जब-तब डकारता भी है। एक से लेकर तीन दिन यह बीमारी रहती है।

इलाज—मवेशी का खाना एक दो दिन तक बिलकुल ही बन्द कर देना चाहिए। मेदे को काम करने लगने के लिये मालिश करनी चाहिये। दाएं मेदे पर बन्द मुट्ठी दबा कर दस या पन्द्रह मिनट तक मालिश करते रहना चाहिये। दिन भर में कई बार मालिश होनी चाहिये। मवेशी को कुछ जोश दिलाने के लिये पीने के थोड़े से पानी में दो छटांक (चार औंस) देशी शराब पिलाना चाहिए। तेल का जुलाब देना फायदा पहुँचाता है। अलसी का तेल तारपीन के तेल के साथ मिला कर देना चाहिये। उसके बाद कोई खारा जुलाब देना चाहिये। पाव भर मामूली खाने का नमक देना ठीक हो सकता है।

ताकत देने वाली नीचे की दवा उस समय दी जानी चाहिये जब बीमारी की तेजी खतम हो रही हो :—

सोंठ	¼ छटांक (४ ड्राम)
कुचला	⅓ तोला (१ ड्राम)
चिरायता	१¼ तोला (४ ड्राम)
	या ¼ छटांक

इन दवाओं को चारे के साथ मिला कर देने से मेदा ठीक होता है। बीमारी की तेजी खतम होने पर पानी खूब पिलाना चाहिये। प्यास उभाड़ने के लिये जीभ के ऊपर थोड़ा थोड़ा नमक रगड़ना चाहिये।

मेदे पर मालिश करने के लिये हल्के गर्म पानी में साबुन घोल कर उसमें तेल अच्छी तरह फेट कर इस्तेमाल किया जा सकता है। सबसे जरूरी तेज जुलाब देना ही होता है। एक बार जुलाब देने पर दस्त न आने पर पन्द्रह या बीस घन्टे बाद जुलाब की दूसरी खूराक देनी चाहिये। बीच बीच में तीन चार घन्टे पर कुछ फुर्ती पहुँचाने वाली दवा भी देते रहना चाहिये।

तेज जुलाब के नुसखे नीचे दिये हैं :—

(१) लाहौरी नमक	६ छटांक (१२ औंस)
मुसब्बर	¼ छटांक (४ ड्राम)
सोंठ	¼ छटांक (४ ड्राम)
शोरा	४ छटांक (८ औंस)

ये सब दवाएं सवा सेर (एक क्वार्ट) गर्म पानी में मिलाकर हल्का गर्म ही पिला दी जायँ।

(२) अलसी का तेल ५ छटाँक (१० औंस)

मीठा तेल ५ छटाँक (१० औंस)

जमालगोटा का तेल ३० बूंद

इन सब चीजों को मिलाकर जवान मवेशी के लिये एक खुराक बनाई जायँ।

बदन को फुर्ती पहुँचाने वाली दवा देशी शराब की जगह दी जा सकती है :—

नौसादर ¼ छटाँक (½ औंस)

सोंठ या अजवाइन १ तोला (२ ड्राम)

इन सब को सवा सेर पानी में मिलाकर देना चाहिये।

दस्त आना शुरू हो जाने पर यह बीमारी दबने लगती है। उस हालत में अलसी का मांड़ और भूसी की सानी आधी या एक छटाँक नमक मिला कर रोज दी जाय। बीमारी का चिह्न बिल्कुल मिट जाने पर थोड़ी-थोड़ी हरी ताजी घास खाने को दी जाय। मेदा कमजोर हो गया रहता है इसलिये जल्दी पचा नहीं सकता। मवेशी के मेदे में चारा रुक कर उसके बीमार पड़ने का फिर डर होता है। पेट में हवा भरने की बीमारी के समान इस बीमारी में भी बाएं मेदे के ऊपरी भाग में ठीक जगह

छेद कर कुछ खाना बाहर निकाल फेंका जा सकता है। उसकी जगह अलसी का मांड़ भीतर डाला जाय। चीरे की सीवन को अच्छा कर लिया जाय। मवेशी डाक्टर ऐसी जर्राही ठीक तरह कर सकता है।

५—कब्ज
(CONSTIPATION)

यह बीमारी गर्मी में ज्यादा होती है। सूखा कड़ा चारा जो देर में पच सकता है, मेदे में इकट्ठा होकर बहुत कड़ा और सूखा पड़ जाता है और मेदे की परतों में जम जाता है। इसलिये मेदा ठीक काम नहीं करता। जब पानी की कमी रहती है तो सूखे मौसम में रेशेदार कड़ी घास, सरकंडा, नरकुल झाड़ियाँ और पेड़ों की टहनियाँ ही मवेशी को भूख के कारण खानी पड़ती हैं। ऐसे कड़े खाने को मवेशी ठीक तरह पीस या कुचलकर नरम नहीं बना पाता। इसलिये वे धीरे-धीरे मेदा में पड़े रह जाते हैं। उसी से कब्ज होती है।

कब्ज होने पर मवेशी जुगाली करना बन्द कर देता है। उसकी भूख मारी जाती है। सांस जल्दी-जल्दी चलने लगती है। मवेशी डकारने लगता है। पहले तो शुरू में कुछ दस्त आते हैं लेकिन आमतौर पर कब्ज ही रहता है। कभी-कभी पतला दस्त आता रहता है और दस्त के साथ

चारे के जमें हुए बहुत बड़े काले रंग के टुकड़े भी निकलते हैं। वे मेदे की परतों में जमे रहने पर छूट कर दस्त के सांथ गिरते हैं। पेशाब का रंग गहरा होता है। पेट भी फूलता सा है।

तकलीफ होने पर मवेशी के मेदे के अन्दर सुर्खी और जलन होती है। उसकी सांस ज्यादा तेज हो जाती है। ज्यादा तेज आवाज से पुकारने भी लगता है, दांत पीसने लगता है। उसका मुंह कान, और सींग ठंडे पड़ने लगते हैं नाड़ी धीमी हो जाती है। गोबर में बदबू ज्यादा रहती है डकारने की जगह मवेशी कराहने लग जाता है। वह बेहोश भी हो जाता है। उसे बड़ी बेचैनी मालूम पड़ती है। उसकी तकलीफ का कारण मेदे की सुर्खी और जलन होती है। यह बीमारी पाँच दिन से लेकर पन्द्रह दिन तक रहती है। जब एक झुंड के किसी ढोर को यह बीमारी हो जाय तो बाकी सब ढोरों को आसानी से पचने वाला चारा या घास ही खिलाना चाहिये और उन्हें पानी ज्यादा पिलाना चाहिये।

इलाज—कब्ज में मवेशी के मेदे में से जमी हुई कड़ी चीज को बाहर निकलवाने का उपाय जरूरी है। इसके लिये बदहजमी के बयान में बताये हुये किसी कड़े जुलाब को देना चाहिये। पाँच पाँच या छः छः घन्टे पर

डेढ छटाँक (तीन औंस) शराब आधा सेर हल्के गर्म अलसी के मांड़ के साथ मिला कर देना चाहिये।

मेदे में जमी हुई कड़ी चीज को छुड़ा कर बाहर निकालने में आसानी होने के लिये कुछ खास तरह का खाना ही बीमार मवेशी को देना मुनासिब है। चावल या अलसी का पतला मांड़ खूब पिलाना चाहिये। इससे मेदा नर्म पड़ कर कड़ी चीजों को अपनी तह में जमा रहने नहीं दे सकता। कड़ा जुलाब देने पर यदि चौबीस घन्टे तक दस्त न हो तो जुलाब की खूराब फिर देनी चाहिये। तेज जुलाब की जरूरत न हो तो हल्का जुलाब ही पिला दिया जा सकता है। अलसी का मांड़ और शराब मिलाकर भी उस समय तक देते रह सकते हैं जब तक दस्त न हो जायँ। पेट पर सेंक भी करना चाहिये। तबीयत में फुर्ती लाने से लिये भी दवा देनी चाहिये।

ज्यादा दिनों से मेदे में खाना सूख कर जमा होते रहने से उस का जल्दी ही निकल सकना मुश्किल हो सकता है। उसके पूरी तरह निकल सकने में ज्यादा समय लग सकता है। इसलिये मांड़ उस समय तक देते रहना चाहिये जब तक कि दस्त में कड़े जमे टुकड़े बिल्कुल न दिखाई पड़ें। पतला मांड़ तीसरे मेदे की तहों के अन्दर से जमे खाने को चौथे मेदे और अँतड़ी में भेजने में जब कामयाब हो जाता है तो ओझड़ी या तीसरे मेदे का

ठीक तरह काम चलने लगता और मवेशी तन्दुरुस्त हो उठता है।

कब्ज दूर करने के लिए एनिमा या बस्ति नाम का उपाय भी बहुत फायदा पहुँचाता है। गोबर करने के रास्ते में चिकनाई में अच्छी तरह लपेटा हाथ डाल कर भीतर इकट्ठी गोबर की सूखी गाँठों को निकाल लिया जाय। इसके बाद हल्के गर्म पानी में साबुन घोल कर एनिमा देने की नली या पिचकारी से गोबर करने के रास्ते में पहुँचाया जाय। काफी पानी पहुँचाने पर अँतड़ी की अटकी हुई गोबर की गाँठें गर्म पानी में घुले साबुन की चिकनाई से बाहर आ जाती हैं।

हल्के जुलाब के कुछ नुस्खे नीचे दिए हैं :—

(१)	घी	तीन पाव
	गर्म दूध	१ सेर

घी गर्म कर दूध में मिलाकर पिला दिया जाय।

(२)	अमलतास	२½ तोला
	सौंफ	२ छटाँक

दोनों चीजें खलकर आधा पाव शीरे या गुड़ के साथ गर्म पानी में पिला दिया जाए।

(३)	मुसब्बर	१ तोला
	सोंठ	१ तोला

दोनों को बारीक पीस कर एक पाव शीरे या सरसों या तिल के तेल के साथ पिला दिया जाय।

कुछ नुस्खे मुंह में छाला पड़ने के बयान में दिए गए हैं।

पेट में दर्द होने पर नीचे के नुस्खे फायदा करते हैं :—

(१)	पीने का तम्बाकू	२ तोला
	पुराना गुड़	छः छटाँक

दोनों को पाव भर पानी में पका कर छरके से पिला दिया जाय।

(२)	अजवायन	२ तोला
	काली मिर्च	१ तोला
	सोंठ	१ तोला
	गुड़	४ छटाँक

आधा सेर पानी में इन सब को पका कर हल्का गर्म ही पिला दिया जाय।

(३)	लहसुन	१ तोला
	प्याज	१ छटाँक
	काला नमक	१ तोला
	काली मिर्च	१½ तोला
	अजवाइन	१ तोला
	हींग	१½ तोला
	सोंठ	१ तोला

कभी कभी बहुत ठण्डा पानी गर्मी के दिन में पिलाने पर भी पेट का दर्द होने लगता है। नहीं तो पेट में सूख कर जमा चारा ही इसका कारण होता है। मवेशी पेट दर्द होने लगने पर जुगाली नहीं करता। खाना बन्द कर देता है। बेचैन हो जाता है। पाँव पटकता है, दाँत पीसता है, गोबर कम, बदबूदार या पतला करता है। दस्त नहीं भी होता। कभी पेट भी फूल जाता है। मामूली पेट दर्द के लिए मामूली दवाएं फायदा कर सकती हैं, लेकिन छूत की बीमारियों से भी ये लक्षण हो सकते हैं। उस हालत में बीमारी ठीक पहचानने से ही दवा हो सकती है।

८—पेट चलना या दस्त

(DIARRHEA)

पेट चलने या दस्त आने की बीमारी में बार-बार पतले दस्त होने लगते हैं। दूसरी कोई तकलीफ नहीं होती। बदन की हालत ठीक रहती है, कोई दूसरी खराबी नहीं रहती, बुखार भी नहीं रहता। सिर्फ पेट में तकलीफ रहती है। मेदे और आँतों की हालत खराब होने से ही पानी मिले दस्त आने लगते हैं। छोटी उम्र के बछड़ों में कभी-कभी छूत की बीमारी से दस्त आ सकते हैं।

जब मवेशी कोई तेज या खराब घास-पात वा चारा खा लेता है या खराब पानी पी लेता है तो उससे दस्त

आने लगते हैं। कहीं जमीन नीची सीलन वाली होती है, वहाँ से पानी की निकासी नहीं हो पाती। वहाँ पर उगी घास खाने से उन घास पातों के कारण भी दस्त आने लगते हैं। कभी जुलाब की दवा ज्यादा दे देने पर भी दस्त ज्यादा आते हैं। लेकिन ये सब कारण न होने पर भी सिर्फ चारा ही मेदों और आँतों में ज्यादा भर जाने पर दस्त होने लगते हैं। बहुत सी छूत की बीमारियों या दूसरी बीमारियों में आखीर में मवेशी जब बहुत कम-जोर पड़ जाता है तो बराबर दस्त आते रहते हैं। पेट की हालत खराब होने पर प्रायः ठंडक लगने पर से भी दस्त आते हैं। इसके उल्टे बहुत गर्मी में रहने पर भी पेट का चलना जारी हो जाता है। बरसात शुरू होने पर जब मवेशी नई उगी घास खाते हैं तो उन्हें प्रायः पतले दस्त आते हैं।

एक कारण आँतों में कीड़े पैदा होना भी है जिससे दस्त आते हैं। थोड़ी उम्र के बछड़ों में दस्त की बीमारी छूत से लगती है। उनकी नाभी का घाव सूखने के पहले एक प्रकार का छोटा कीड़ा नाभी के रास्ते खून में पहुँच जाता है जिससे दस्त आने लगते हैं।

दस्त आने या पेट चलने की पहचान यह है कि पतला गोबर बार-बार आता है। मवेशी अच्छी तरह

खाता पीता है। कुछ जुगाली करने में गड़बड़ी हो सकती है। या दूध में कमी आ सकती है। लेकिन तन्दुरुस्ती में खास फर्क नहीं मालूम पड़ता। पहले दस्त करने में मवेशी कुछ जोर नहीं करता लेकिन बाद में ज्यादा दस्त आने लगने पर उसे दस्त करने के लिये जोर लगाना पड़ता है, उसे तकलीफ होती है। पीठ ठंडी मालूम पड़ती है। कोख में गड्ढे हो जाते हैं। बाल खड़े हो जाते हैं, मवेशी दुबला पड़ने लगता है।

<u>इलाज</u>—बीमारी की वजह का पता लगाकर उसे दूर करने की कोशिश करनी चाहिये। चराई की जगह या चारा पानी बदलने की जरूरत हो तो बदल देना चाहिये। दवा के लिये शुरू में अलसी का तेल एक खूराक देना चाहिये। बाद में नीचे लिखे नुसखे की दवा दी जा सकती है :—

अफीम	२ या ४ माशा (आधा से १ ड्राम तक)
कत्था	ट या १/४ छटाँक (चौथाई या आधा औंस)

पिसी खड़िया मिट्टी आधी छटाँक (१ औंस)

चावल के मांड़ में इन सब चीजों को फेंट कर दिन भर में दो बार पिलाना चाहिये। दस्त बन्द होने

पर यह दवा पिलाना बन्द करना चाहिये। बछड़ों को इसकी चौथाई खुराक ही देना चाहिये।

पीसा हुआ तूतिया १ तोला (३ ड्राम) सवा सेर पानी में घोल कर पिलाने से भी दस्त का आना बन्द हो सकता है। लेकिन यह दवा पुराने दस्त की बीमारी में ही दी जानी चाहिये।

दस्त आना रोकने के लिये दवा देने के पहले हल्का जुलाब दे देना जरूरी होता है। इसीलिये अलसी के तेल की एक खुराक दी जाती है। खाली अलसी के तेल की जगह ५ छटाँक (१० औंस) रेंडी के तेल में ३ छटाँक (६ औंस) अलसी का तेल मिला कर भी दिया जा सकता है। इस हल्की दस्तावर दवा का असर हो जाने पर दस्त रोकने वाली पीने की दवा दी जानी चाहिये।

दस्त आने की तेज बीमारी होने पर मवेशी को खाने के लिए सिर्फ चावल का मांड़ और चोकर की सानी देना चाहिए। पीड़ा होने पर सेंक भी करनी चाहिए। दस्त बन्द होने पर भी चावल और अलसी का मांड़ आटे की लपसी में मिलाकर खाने को देना चाहिए। कमजोर मवेशी को फुर्ती देने वाली दवा भी देना चाहिए।

थोड़ी आयु के बछड़ों में बीमारी बड़ी तेज होती है। उनको सफेद दस्त आते हैं। जोड़ों में सूजन हो आती है जो गर्म होती है और दर्द भी होता है। छूत से दस्त

लगने का रोग लगने वाले बछड़े प्रायः मर ही जाते हैं। उनकी दवा सयाने पशु की ही है लेकिन चौथाई खूराक देनी चाहिए।

जिन जानवरों के गोबर के साथ कीड़े आते हों उनकी दवा कीड़े मारने वाली दवाओं से करनी चाहिए। पेट के कीड़े दूर करने वाली दवाएं नीचे लिखी हैं :—

(१)	तारपीन का तेल	१ छटाँक (२ औंस)
	अलसी का तेल	१० छटाँक (१ पाइंट)

बारह घन्टा भूखा प्यासा रख कर यह दवा पिलाई जाने पर फायदा करती है।

(२)	नमक	१ छटाँक (२ औंस)
	पीसा हराकसीस	¼ छटाँक (½ औंस)
	पीसी गन्धक	½ छटाँक (१ औंस)

सवा सेर पानी में इन दवाओं की एक खूराक दिन भर में दो बार पिलानी चाहिए। हफ्ते भर तक दवा पिलाना जरुरी है। बाद में तेज जुलाब दिया जाय।

(३)	हींग	¼ छटाँक (½ औंस)
	पीसी गन्धक	½ छटाँक (१ औंस)

इस दवा को भी बारह घन्टा भूखा प्यासा रख कर मवेशी को पिलाना चाहिये।

दस्त आने के कारणों में सर्दी गर्मी भी होती है। सर्दी के कारण दस्त आने का एक नुस्खा नीचे है :—

जवाखार, सज्जी, साँभर नमक, सेन्धा नमक, सोंचर, हल्दी, हर्रे, आँवला, बहेरा, सफेद जीरा, भाँग, काला जीरा, कंकूद, देवदार, काली मिर्च, पीपर, पीपरामूर, बीज सोवा, बीज मूली, शतावर, बाय बिडंग, नागोरी असगन्ध, सोंठ, अजवाइन, अजमोद, सहजन की छाल— ये सब चीजें बराबर बराबर ले कर बारीक पीस ली जाय। रोज दो तोला खिलाया जाय।

गर्मी से दस्त लगने के लिए नीचे नुस्खे हैं :—

(१) फालसे की छाल आध पाव बारीक चूरा करे जौ के आटे में सान कर रोज दोनों वक्त खिलाया जाय।

(२) आध पाव अलसी जौ के आटे में खिलाई जाय।

(३) सौंफ, अजवाइन, बड़ी इलायची एक एक तोला लेकर तीनों तोला चिरायता के साथ चूरा बना लिया जाय और आधा सेर जौ के आटे में खिलाया जाय।

(४) आध पाव बेल का गूदा ढाई तोला खरिया मिट्टी के साथ आधा सेर मट्ठे में घोल कर पिलाया जाय।

७–पेचिश या आँव

(DYSENTRY)

खराब खाने के कारण अंतड़ियों की झिल्ली में सुर्खी जलन और सूजन होने से पेचिश या आँव पड़ती

है। इस बीमारी का कारण कीटाणु भी होते हैं। अंतड़ियों में कभी कभी घाव भी हो जाता है। इस बीमारी की साफ़ पहचान यह है कि गोबर के साथ खून और आंव गिरने लगता है। गोबर थोड़ा आता है या बहुत पतला पानी सा होता है।

खराब तरह की घास खाने या खराब पानी पीने से यह बीमारी पैदा होती है या पेट चलने की बीमारी के आखीर में उभरती है। दिन में ज्यादा गर्मी हो और रात ठन्डी या ज्यादा सीलन की जगह मवेशी रक्खे जायें तब यह ज्यादा होती है। छूत वाली बीमारियों में भी पेचिश पड़ती है।

दस्त आने की मामूली बीमारी होने के लक्षणों के बाद पेचिश अचानक शुरू हो सकती है। कभी कभी कंपकंपी भी होती है, बुखार भी हो आता है। उस समय दस्त जल्दी जल्दी शुरू हो सकता है जिसमें कड़ी गांठें निकलें और बाकी भाग पानी की तरह हो। उसमें खून और आंव मिली होती है। कभी पेट में दर्द होता है। उस समय मवेशी गोबर करना चाहता है लेकिन दस्त जल्दी नहीं आती। जोर लगाने से उसकी कांच बाहर निकल आती है।

इलाज—पहले हल्का जुलाब देकर पेट को कुछ हल्का और साफ़ करना चाहिए। पेट को सेंकना भी

चाहिए। दस्त लगने या पेट चलने की बीमारी की ही दवाएं इस में भी दी जाती हैं। कभी कभी जहर खाने से भी यह बीमारी हो सकती है। उस हालत में मामूली पेट चलना रोकने की दवाओं से कुछ भी फ़ायदा न होगा छूत वाली बीमारा के कारण भी हुआ रोग असली रोग की दवा करने से ही ठीक होगा।

पेचिश के रोगी मवेशी को बहुत नर्म, सादा और बहुत जल्द पचने वाला खाना देना चाहिये। अलसी की चीजें, खौलाया दूध, जई का पानी, लपसी, बेल के फल का शर्बत दिया जाना चाहिये। पानी बहुत ही कम पिलाना चाहिये। चावल के माँड़ में नमक डालकर दे सकते हैं। तीसी, उड़द या बेल पका कर आधा हिस्सा माँड़ के साथ दिया जा सकता है।

नीचे की कुछ दवाएं फायदा पहुँचा सकती हैं :—

(१) कबाबचीनी	१ तोला
सोरा	१ तोला
चन्दन का तेल	½ तोला

इनको चावल के ठंडे माँड़ के साथ दिन में दो बार दिया जाय।

(२) शतमूली, तीसी, गिलोय या मेंहदी का काढ़ा थोड़ा-थोड़ा खिलाना फायदा पहुँचाता है।

(३) आमड़ा, आम, जामुन और आँवले के कच्चे

पत्ते का रस गुड़ या बकरी के दूध के साथ दिया जाय।

(४) धतूरे का बीज का चूरा छः आना भर (साढ़े चार माशा)

कपूर बारह आना भर (नौ माशा)

देशी शराब आधा पाव

चावल के मांड़ के साथ मिलाकर खिलाना चाहिए।

(५) सफेदा छः आना भर (साढ़े चार माशा)

खरिया मिट्टी आधी छटाँक

अफीम बारह आना भर (नौ माशा)

सब चीजों को मिला चावल के माँड़ के साथ खिलाया जाय।

(६) पाव भर आँवला कांच या मिट्टी के बर्तन में रात भर भिगो कर उसे मीज कर छान लिया जाय। उस के पानी में पाव भर दही, एक छटाँक ईसबगोल और आधा पाव शक्कर मिलाकर रोज दो बार दिया जाय। आँवले के पानी की जगह धनिया का पानी इस्तेमाल किया जा सकता है।

८—खाँसी

(BRONCHITIS)

साँस लेने की नाली और फेफड़े तक उसकी फैली शाखाओं में सूजन होने से जो रोग होता है उसका कुछ

खास नाम है। खाँसी तो उसका एक लक्षण है। ठंड या भीगने या गर्मी के अकस्मात घट बढ़ जाने से बदन पर असर पड़ने से यह बीमारी होती है। ऐसी हालत में कीटाणु जोर पकड़ लेते हैं। कभी कभी छूत के कारण ही यह बीमारी हो जाती है। मवेशी बेचैन होता है, खाँसने लगता है, खाना बन्द कर देता है, उसके बदन की गर्मी बढ़ जाती है। साँस लेने में रुकावट होने लगती है। नाक, मुंह से कफ बलगम गिरना शुरू हो जाता है। शुरू में खाँसी बहुत सूखी होती है। उसमें कुछ खरखराने की आवाज रहती है। मवेशी जल्दी जल्दी साँस लेने लगता है। उसमें साँय साँय की आवाज होने लगती है। गले के नीचे के हिस्से पर कान लगा कर सुनने पर साँय साँय की आवाज साफ सुनाई पड़ सकती है। कुछ वक्त के बाद खाँसी में नमी या तरी आती है। साँस लेने की नली की झिल्ली से कफ या बलगम निकलता है। इसीलिए खर-खराहट की आवाज होने लगती है।

छोटी उम्र के मवेशी या भेड़ों में खाँसी का कारण धागे की तरह के कीड़े हो सकते हैं। उसमें खाँसी जल्दी जल्दी होती है। उसमें रूखापन भी रहता है। रह रह कर मवेशी पर खाँसी का दौरा हो उठता है। मवेशी घबड़ा कर खड़े होने पर पैर आगे बढ़ा लेते हैं, घुटने बाहर की ओर घुमा लेते हैं, सिर और गर्दन भी बाहर की

ओर करते हैं जिससे साँस लेने में उन्हें कुछ आसानी हो। वे बलगम निकालने की कोशिश करते हैं जिससे कीड़े बलगम के साथ ही बाहर आकर उनकी तकलीफ में कमी आने दें। कीड़ों से खाँसी होने वाले मवेशी दुबले पड़ कर दो तीन हफ्तों में मर जाते हैं। यह छूत से दूसरे मवेशियों को भी हो जाती है।

इलाज—इस बीमारी का असर मवेशी पर दिखाई पड़ते ही उसे हटाकर किसी खुली जगह पर ले जाना चाहिए। जहाँ साफ हवा और धूप लगे और ठंडी हवा से भी बचत की जगह हो। कोई गर्म कपड़ा, कंबल वगैरह उसके बदन में लपेट देना चाहिए और उसे ढीले ढंग से ही छाती पर बाँध देना चाहिए। अगर छूत की बीमारी का अन्देशा हो तो मवेशी को फौरन ही अलग कर देना चाहिए। हल्की और जल्द पचने वाली चीजें ही खाने को देनी चाहिए। सूखा चारा बिल्कुल बन्द कर देना चाहिए। नीचे की दवा देना बहुत फायदेमन्द साबित हो सकता है :—

बेलेडोना सत	$\frac{१}{२}$ ड्राम
कपूर	१ ड्राम
पोटेशियम क्लोरेट चूरा किया	२ ड्राम

इन तीनों को मिलाकर हर पाँच या छः घन्टे पर पिलाना चाहिए।

यूकलिप्टस तेल या तारीपन के तेल की भाप नाक में पहुँचानी चाहिये। दिन भर में दो बार भाप पहुँचाना फ़ायदा करता है। सूखा तारपीन का तेल छिड़का सूखा कपड़ा गर्म कर छाती सेकनी चाहिए। या रह रह कर सेंक के बाद कोई तेज लेप लगा दिया जाया करे।

कमजोर मवेशी को बीमारी की पहली तेजी खतम होने पर नीचे की फुर्ती बढ़ाने वाली दवा देनी चाहिए :—

कुचिला	½ ड्राम
चिरायता	२ ड्राम
सोंठ	२ ड्राम
सोडा बाई कार्ब	२ ड्राम
एमोनियम क्लोराइड	२ ड्राम

इन सब को मिला कर खाने के साथ दिया जाय।

बीमार मवेशी को दिन में दो बार सिर्फ चावल, अलसी या चोकर का मांड़ देना चाहिये। साथ ही कुछ दवा तबीयत में फुर्ती लाने के लिये भी देना चाहिए। ½ छटांक नौसादर के साथ एक तोला सोंठ या अजवाइन मिला कर सवा सेर पानी के साथ देने से उनमें कुछ फुर्ती आ सकती है।

बहुत से जानवरों को खांसी होने पर उन्हें एक छप्पर में रख कर रात को भीतर गन्धक की धूनी दी जाय। खिड़कियां बन्द रक्खी जाँय लेकिन भीतर ही आदमी भी

रहे जिससे धूनी ज्यादा तेज हो तो उसका पता चल जाय। जब धूनी से कुछ तकलीफ मालूम होने लगे तो खुली जगह बना दी जाय जिससे धुआँ बाहर निकल जाय। एक एक दिन का फर्क देकर धूनी देनी चाहिए। गन्धक का धुआँ सांस लेने की नली में पहुँचने पर फायदा करता है। यह सब दवाएं मामूली वजह से सयाने मवेशियों को होने वाली खांसी के ही लिए हैं।

प्रसूति का बुखार

(MILK FEVER)

गायों में बच्चा देने के बाद यह बुखार होता है। कम दूध देने वाली गायों पर इस बीमारी का हमला नहीं होता। दुधार गायों को ही ज्यादा होता है। मोटी ताजी गायों की ही बीमारी इसे समझना चाहिए। हमारे देश में इस बीमारी का ज्यादा जोर नहीं, लेकिन बाहर के मुल्कों में बहुत जोर है। इस बीमारी में पड़ी गायें १०० में से ७५ जरूर मर जाती हैं। गायों में बच्चा देने के अलग अलग समयों बाद यह बीमारी हो सकती है। बच्चा देने के बाद जितनी जल्दी यह बीमारी होती है, उतनी ही खतरनाक होती है। आमतौर पर तीसरी बार बच्चा देने पर यह बीमारी होती है। प्रायः अच्छी खूराक पाने वाली मोटी ताजी खूब दुधार गायें घर के अन्दर

बच्चा देने पर ही बीमार पड़ती हैं। आमतौर पर बुखार नहीं होता, मवेशी बेहोशी होकर जमीन पर लेटा पड़ा रहता है। उसका सिर या तो पीछे मुड़कर छाती से जा लगा होता है और नाक बगल की ओर होती है या मुंह ढीला पड़ कर जमीन पर पड़ा होता है। कुछ समय के लिए पेशाब पाखाना बन्द हो गया होता है। शायद मौसम की तबदीली, ठंडी गर्मी के एकाएक घट बढ़ जाने या दूर तक चलने फिरने की थकावट के कारण भी गायों को यह रोग बच्चा देने के पहले या बाद को हो जाता है।

बच्चा देने के चौबीस घन्टे बाद या कभी कभी तीन दिन या सात दिन बाद इस बीमारी का हमला होता है। शुरू में मवेशी पिछले पैरों से लंगड़ाता या कराहता है। खड़ा होना मुश्किल होता है। खड़ा होने की कोशिश करने पर भी बार बार बैठ जाने के लिये मजबूर होता है। पर नाड़ी और साँस की चाल धीमी हो जाती है। बेहोशी हो कर बदन की गर्मी घट जाती है और दो तीन दिन में मवेशी की मौत हो जाती है।

प्रसूति का बुखार होने पर बेकार की दवाएं मुंह में ढकेलना ठीक नहीं। उनसे कुछ खास फायदा नहीं होता। इसके लिये चारों पैरों में हवा ठूंसना बड़ा काम

करता है। चीरा देकर हवा भरने के लिये सफाई का खास ख्याल रखना चाहिये जिससे बीमारी के कीटाणु कटे भाग में हमला करने का आसान रास्ता न पा जायं। इसके लिये एक हवा भरने का खास पम्प इस्तेमाल करना चाहिये जो खौलते पानी या कीटाणु मारने वाली दवा में डुबो लिया गया हो। हवा भरने के चार घन्टे के भीतर ही मवेशी उठ खड़ा होता है। कभी-कभी दुबारा हवा भरने की भी जरूरत पड़ जाती है। होश आने की पहली निशानी यह होती है कि मवेशी पेशाब पाखाना तुरन्त जारी कर देता है। गाय के खड़े हो जाने के बाद बारह घंटे तक उसका दूध नहीं दुहना चाहिये। पूरी तरह तो दो तीन दिन तक नहीं दुहना चाहिये। बीमार होने के बाद जितनी जल्दी यह तदबीर शुरू की जाय उतनी ही ज्यादा बीमारी दूर होने की उम्मेद की जा सकती है। उस हालत में बीमारी ज्यादा खराब भी नहीं होने पाती। जो भी खाना दिया जाय, नर्म, अच्छा और जल्दी पच जाने वाला हो। कोई मवेशी का डाक्टर बुला कर जरूरत पड़ने पर कैल्सियम ग्लूकोनेट की सूई लगवाई जा सकती है। बच्चा पैदा होने से हड्डी को बनाने वाली चीज, कैल्सियम की बदन में बहुत कमी हो गई रहती है। इसलिये इस सुई के लगाने से वह कमी पूरी हो सकती है।

१०–ऐन की सूजन

(ACUTE MASTITIS)

ऐन फूल जाने की बीमारी बहुत खराब बीमारी है। इसका तुरन्त कुछ इलाज न करने से बड़ी खराबियाँ हो सकती हैं। गाय का दूध सूख सकता है और बाद में कभी गाभिन न होने का भी खतरा हो सकता है। इस बीमारी का उभाड़ कीटाणु के कारण ही प्रायः होता है लेकिन ठंडी जगह सोने पर ठंड खा जाने या बच्चा पैदा होने के पहले या बाद में ऐन में चमड़ा छिड़ जाने या चोट लगने से वह उमड़ सकती है। अगर बच्चा होने के पहले ही थन से काफी दूध रिसने लग जाय और दूध दूह न लिया जाय तो वह थक्का बाँध कर सूजन पैदा कर सकता है। ऐसी हालत में ऐन में सुर्खी और सूजन होकर दर्द पैदा कर देती है। ऐन या थन के अंदर कुछ कड़े थक्के टटोल कर मालूम हो सकते हैं

ऐन की सूजन होने पर गाय को झुंड के दूसरे मवेशियों से अलग कर लेना चाहिये। उसके लिये कोई अलग ही चारा पानी देने वाला आदमी हो तो बहुत अच्छा हो। यदि एक ही आदमी सब गायों को दूहने वाला हो तो उसे पहले तन्दुरुस्त गायें ही दूहनी चाहिये। सबसे बाद में बीमार गाय का दूध दूहना चाहिये। उस

गाय के लिए सोने के लिए काफी पुआल रखना चाहिये। हल्का जुलाब फायदा करता है। इसके लिये आधा सेर सल्फेट आफ मैगनीसिया सवा सेर पानी में मिला कर देना चाहिये। यदि थन पर कोई घाव या चोट हो तो उस पर टिंचर आइडिन या किसी दूसरे मरहम को लगा कर पट्टी बाँध देनी चाहिए। बोरिक मिले खौले पानी में भिगी रुई से ऐन की गर्म सेंक करनी चाहिये। बाद में ऐन सुखा लेना चाहिये।

ऐन के ऊपर रोज कोई पुल्टिस बाँधते रहना चाहिये जो सूजन कम करे। बीमारी की तेजी कम होने पर ऐन को तेल लगे हाथ से मलना चाहिये। साबुन या बेलेडोना का लेप दिन में दो बार लगाना चाहिये। ऐन ज्यादा लटका होने पर लटकने वाली पट्टी ही बाँधी जा सकती है। जब तक इस बीमारी का असर रहे, गन्दे होते हुये पैरों की हर चार घन्टे या हर घन्टे पर सफाई करते रहना चाहिये। दूध ज्यादा रिसते रहने पर ही हर घन्टे सफाई की जरूरत हो सकती है।

बीमार गाय का खाना बहुत हल्का और जल्दी जल्दी पचने वाला होना चाहिये। इस बीमारी का असर गाय के दूध पर पड़ता है और बीमारी बड़ी खराब है इसलिए जहाँ तक हो सके मवेशी के डाक्टर से ही इसका इलाज करवाना चाहिये। गाय को १ ड्राम फोर्मलीन ढाई

सेर पानी में घोल कर पिलाना चाहिए। यह दवा ऐन के भीतर आकर रिसने पर रोग दूर करने में मदद कर सकती है। ऐक्रिफ्लेभीन नाम की दवा पांच हजार गुना पानी में घोल कर उस से ऐन धोना और बाद में साफ कर लेना फायदा करता है।

११—साँप का काटा

(SNAKE BITE)

पशुओं या मवेशियों को कभी कभी साँप काट देते हैं। साँप जहरीले हो सकते हैं या बिना जहर के। बिना जहर वाले साँपों के काटने की पहचान यह है कि उनके काटने के निशान प्रायः बहुत से दोहरे छेदों की दो कतारें बनाते हैं। लेकिन जहरीले सांपों के काटने पर दांत के काटे छेदों को दो इकहरी पंक्तियाँ ही होती हैं। इन इकहरी दो कतारों के अलावे इनके दोनों ओर इनसे कुछ बड़े और गहरे एक एक छेद होते हैं। जहरीले साँपों में भी बिल्कुल दो किस्मों की जातियाँ होती हैं। फनियल (कोबरा या गेहुँवन) और करैत साँपों के काटने पर दिमागी नाड़ियों पर खतरनाक असर होता है। खास कर साँस लेने के अंगों पर जोरदार असर होता है लेकिन दबोइया (वाइपर) साँपों के काटने पर काटने की जगह पर ही ज्यादा असर देखा जाता है।

इलाज—बहुत जहरीले साँपों के काटने पर उन के जहर का असर होने में दस पाँच मिनट से ज्यादा देर नहीं लगती। मवेशी को बड़ी जल्दी ही मौत हो सकती है। उस में ऐंथ्रैक्स (छूत की खतरनाक बीमारी) की तरह रोग के लक्षण पैदा हो सकते हैं। किसी जगह सूजन और दाँतों के काटने का निशान बने होने और छूत की बीमारी होने का कोई कारण न दिखाई पड़ने पर सांप के काटने का पता चल जाता है। कुछ कम जहरीले सांपों के काटने पर कई घन्टों या एक दो दिन की देरी से जहर का असर मालूम पड़ता है। काटने की जगह के ऊपर के हिस्से में कोई पट्टी कसकर बांध देना ठीक हो सकता है। पट्टी को एक घन्टे तक बाँधा रक्खा जाय। काटने के छेदों पर या आस-पास आधा इञ्च गहरा एक या दो घाव कर उसे दबा कर खून बाहर निकालना चाहिये। खून निकलने से उसी के साथ जहर भी बाहर हो जाता है। इसके बाद कुएं में छोड़ी जाने वाली लाल दवा (पोटैशियम परमेंगनेट) के रवे घाव के अन्दर अच्छी तरह रगड़ना चाहिये और उसके बाद घाव को कोई ब्लीचिंग पाउडर घुले हुये पानी से धोना चाहिये। धोने के बाद पोटैशियम परमेंगनेट या ब्लीचिंग पाउडर के तेज घोल में कपड़ा या रुई भिगोकर गद्दी की तरह घाव पर रख कर पट्टी बाँध देनी चाहिये। मवेशी को पीने के

लिए कुछ गर्म चीज, अल्कोहल या गर्म चाय देना चाहिए। मवेशी डाक्टर से साँप का जहर रोकने वाला टीका लगवा लेना सबसे अच्छा हो सकता है।

बर्रे का काटा

मवेशियों को कभी-कभी बर्रे या मधुमक्खी काट लेती है। उनके काटने से कुछ सूजन हो आती है उस से बड़ा दर्द होता रहता है। एक या दो दिन तकलीफ रहती है। बहुत सी मधुमक्खियों या बर्रे के काटने पर बहुत तकलीफ हो सकती है। मवेशी में मूर्च्छा आने लग जाती है। सिर, मुंह, गले और नथनों में काटने पर साँस लेना भी मुश्किल हो जाता है।

इलाज—नौसादर का हल्का घोल या सोहागा का घोल इस्तेमाल करने से बर्रे या मधुमक्खी के डंक के जहर, फोर्मिक एसिड का असर मिट जाता है। लेड लोशन का इस्तेमाल ठंडक उत्पन्न करता है। विलायती या देशी शराब पिलाने से मवेशी की मूर्छा दूर होती है।

१२–जहर खाना

(POISONING)

मवेशी कभी कभी तो खुद ही गलती से जहर खा लेते हैं या कभी जान बूझकर कुछ लोग दुश्मनी या

किसी लालच से उन्हें खिला देते हैं। जहरों में भी दो किस्में होती हैं। एक तो पेड़ पौधों की जड़, फूल पत्तियों और फलों वगैरह से पैदा होते हैं। पेड़ पौधों वाला जहर तो मवेशी भी खुद गलती से खा सकता है। लेकिन खान की चीजों से पैदा जहर ज्यादातर दूसरों के खिलाने से ही इनके पेट में पहुँच सकते हैं।

मवेशी आमतौर पर जहरीले पौधों को मुंह नहीं लगाते। लेकिन सूखा के दिनों में कहीं हरियाली न होने पर जहरीली घासों या पेड़ पौधों को भी वे खा सकते हैं। कभी ज्वार के ठिगने बने पौधे फूल लगने के पहले की हालत में उन जगहों में जहरीले हो सकते हैं जहाँ जमीन में बहुत ज्यादा नाइट्रोजन हो। उस हालत में पौधे में हाइड्रोक्यानिक नाम का जहर इसमें बहुत ज्यादा हो सकता है जिसे बहुत खा लेने हर मवेशी मर सकता है।

संखिया एक खतरनाक जहर है। ज्यादा खाल मिलने के लालच से कहीं कहीं गाँवों में चमार इस जहर को घास के बीच या चरी के बीच रख कर मवेशियों को खिला देते हैं या चरागाहों में घास या चारों के ऊपर छिड़क देते हैं। किसी तेज हथियार से चमड़े में छेद कर भी यह जहर मवेशियों के बदन में पहुँचाया जाता है जिससे उनकी मौत हो जाती है।

खान से निकली चीजों से पैदा जहरों में संखिया

हड़ताल वगैरह हैं। पेड़ पौधों से पैदा जहरों में धतूरा मदार, कुचला और बछनाग (मीठा तेलिया) वगैरह हैं। इन जहरों से मवेशियों का नुकसान तो हो ही सकता है। लेकिन सबसे खतरनाक चीज तो छूत वाली कई बीमारियाँ हैं। अगर दुश्मनी या चमड़े के लालच के कारण उन बीमारियों को ही फैला कर किसी गाँव या इलाके के मवेशियों की मौत कराने के लिए कोई आदमी उतारू हो तो उसके लिए कुछ मुश्किल काम नहीं हो सकता। बड़े बड़े चमड़े के कारखानों के लिए मवेशियों की खाल ज्यादा तादात में जरूरत होती है। उसके लिये कुछ व्यापारी ठीका लेते हैं। वे चमारों से बहुत ज्यादा खाल खरीदा करते हैं। चमार उस लालच में पड़कर कहीं कहीं मवेशियों की मौत लाने के लिये तरकीब करते पाये गये हैं। एक इलाके में रिंडरपेस्ट नाम की खतरनाक छूत की बीमारी फैली थी। वहाँ बहुत से मवेशी मर रहे थे। अचानक किसी दूर के गाँव या इलाके में भी रिंडरपेस्ट की बीमारी फैली जिससे बहुत से मवेशी मरने लगे। बड़ी खोज के बाद पता चला कि बीमारी फैले हुए पहले इलाके के एक चमार ने रिंडरपेस्ट से मरे मवेशियों की अँतड़ी और खाल ले जाकर उसे दूसरे गाँव में चरागाहों में घास पर फैला दी थी। उससे घासों में बीमारी के कीटाणु फैले जिससे यह खतरनाक बीमारी वहाँ चरने वाले

मवेशियों में फैली और वे मरने लगे। लेकिन ऐसी शरारत कहीं कहीं ही हो सकती है। अनजाने भी बीमारी बहुत फैल सकती है।

मवेशियों की मौत लाने के लिये पेड़ पौधों से पैदा जहरों की भी कमी नहीं है। बहुत से पेड़ पौधे तो हमें बिना जहर के मालूम पड़ते हैं लेकिन मवेशी उन्हीं को खाकर मर सकते हैं। रेंड़ी का पौधा या बीज एक ऐसा ही पौधा है। कभी कभी इसे ही खा लेने से मवेशी पर जहर का असर हो जाता है।

जहर खाने की पहचान कई तरह से होती है। जब मवेशी कोई जहर खा लेता है या उसे खिला दिया जाता है तो वह अचानक बीमार पड़ जाता है। उसे कँपकँपी होने लगती है। पेट में बड़े जोर से दर्द होने लगता है। इस कारण वह पेट में अपनी सींग या पिछली टांग मारता है। बार बार सिर घुमाकर पेट की ही ओर देखने की कोशिश करता है। उसके मुंह में झाग भर जाता है। बदन में ऐंठन होती है। पेट फूलने लगता है। बार बार पाखाना होता है। पतली दस्त होने लगती है उसमें कभी कभी खून भी आता है। जहर का तेज असर होने से दो चार घन्टों में उसकी मौत हो सकती है।

इलाज—अगर जहर बहुत ज्यादा खा लिया गया हो तब तो इलाज से फायदा होने की उम्मीद करना

बेकार हो सकता है। गाँव में तुरन्त कोई अच्छी दवा मिलना या मवेशी के डाक्टर का पहुँचना मुश्किल ही हो सकता है। लेकिन जहर मामूली या थोड़ा ही हो उस समय कुछ दवा खिलाने से ही फायदा हो सकता है। अलसी का माँड़ काफी देते रहना चाहिये।

जिन हालतों में मवेशी रहता हो या उसका चारा हो उसे बदल देने की कोशिश करनी चाहिए। अगर चारा कोई नई चीज हो तब तो उसे जरूर ही बदलना चाहिये। सिर्फ नई चीजें देनी चाहिये। अलसी के मांड़ के अलावा सानी और नर्म घास दी जानी चाहिये। मवेशी को चुपचाप बेफिक्र रहने देना चाहिये। जिस चीज से जहर पेट में पहुँचने का डर हो उसे आस पास देखने की कोशिश करनी चाहिये। जहाँ मवेशी आसानी से जा सकता है, वहाँ कोई चीज जहर का काम करने वाली हो तो उसे देखना चाहिये।

जो जहर पेट में जलन पैदा कर दस्त लाते हैं उनके असर को रोकने के लिये चावल का माँड़ या कोई ठन्डी चीज देनी चाहिये। पेट का दर्द मिटाने के लिये कुछ अफीम देनी चाहिए। मुर्दनी लाने वाले जहरों के असर रोकने के लिये अल्कोहल, ब्रांडी या ह्विस्की दी जानी चाहिये। नौसादर चूने को मिलाकर उसे सुंघाना चाहिये। सुस्ती दूर करने के लिये मवेशी को चलाते फिराते रहना चाहिये

और ठन्डे पानी का एनिमा या वस्ति देना चाहिये। कुछ तारपीन का तेल भी इस्तेमाल करना चाहिये। अँतड़ी से जहर बाहर करने के लिये तेल वाले जुलाब देना चाहिये।

ठिगने ज्वार का जहर रोकने का तरीका यह है कि उन्हें मवेशियों को खिलाने के पहले फूलने की हालत तक पहुँच जाने दिया जाय। अगर उसके जहरीले रूप में खाने से जहर फैला हो तो उसका इलाज हाईपोसल्फेट आफ सोडा पिलाना है। मवेशी के डाक्टर से इलाज कराना सबसे अच्छा है।

संखिया का असर होने पर तेल वाले जुलाब देना और कुछ जोश देने वाली चीजें दूध, अंडे की सफेदी, और चूने का पानी देना ठीक है। इस जहर को मिटाने वाली बढ़िया दवा बनाने के लिये आइरन परक्लोराइड टिंचर को कार्बोनेट आफ सोडा में मिलाकर उसे रूमाल से छान लेना चाहिये। इसे हल्के गाढ़े पानी के साथ देना चाहिये।

जहाँ बहुत ज्यादा और तेज़ जहर देने से मवेशी बीमार हो वहां उसका इलाज न हो सकने पर मवेशी के डाक्टर और पुलिस को इत्तला कर देना चाहिये जिससे उसके ठीक कारण का पता लगाने से दूसरे मवेशी मौत से बचाए जा सकें।

मवेशियों के साधारण रोग

जगपति चतुर्वेदी

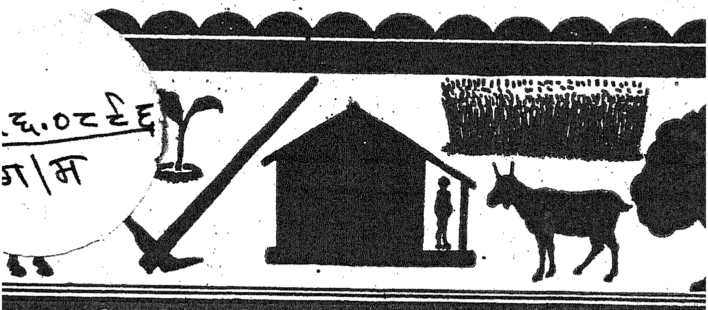

छात्र-हितकारी-पुस्तक-माला, दारागंज, इलाहाबाद